सीएसआईआर की सहयोगी जम्मू की आईआईआईएम ने किया ईजाद

जोड़ों के दर्द की रामबाण दवा खोजने का दावा

डॉ. बृजेश कुमार सिंह

जम्मू। जोड़ों के दर्द से परेशान लोगों के लिए राहत की खबर है। सीएसआईआर की सहयोगी संस्था इंडियन इंस्टीट्यूट आफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन (आईआईआईएम) ने रियूमैटाइड अर्थराइटिस के लिए एक ऐसे कारगर पौधे की खोज की है जिससे जोड़ों का दर्द छू-मंतर होने का दावा किया जा रहा है।

इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने ऊंचे पहाड़ी इलाकों में पाए जाने वाले पाषाणभेद (बर्गेनिया सिलिआटा) नामक पौधे में मौजूद तत्वों को इस रोग में फायदेमंद माना है। अब तक यह पौधा किडनी, मूत्र थैली से पथरी निकालने, पाइल्स और सांस संबंधी तकलीफों के इलाज में इस्तेमाल किया जाता रहा है। पौधे के औषधीय गुणों को ध्यान में रखते हुए यहां के वैज्ञानिकों ने शोध किया तो पाया कि यह रियुमैटाइड अर्थराइटिस में भी काफी कारगर है। वैज्ञानिकों ने इस पौधे के केमिकल का चूहे पर प्रयोग किया तो परीक्षण के नतीजे काफी उत्साहजनक रहे। इंस्टीट्यूट के निदेशक डा. राम विश्वकर्मा का दावा है कि करीब तीन साल के प्रयोगशाला तथा चूहे पर किए गए अध्ययन में काफी सफलता मिली है। इसके नतीजों से डा. विश्वकर्मा उत्साहित हैं। इसके लिए आईआईआईएम ने पेटेंट कराने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। निदेशक का दावा है कि इस पौधे से मिलने वाले रसायन से दवा तैयार करके बिना किसी दुष्परिणाम के रियुमैटाइड अर्थराइटिस का कारगर इलाज किया जा सकता है। ये पौधे किश्तवाड़ के इलाके में पाए जाते हैं।

पहाड़ी इलाकों में पाए जाने वाले **पाषाणभेद (बर्गेनिया सिलिआटा) पौधे** में मौजूद तत्व इस रोग के इलाज में फायदेमंद

- बर्गेनिया सिलिआटा पौधे किश्तवाड़ के इलाके में पाए जाते हैं
- यह पौधा किडनी, मूत्र थैली से पथरी निकालने, पाइल्स व सांस संबंधी बीमारी में इस्तेमाल किया जाता रहा है

रियुमैटाइड अर्थराइटिस

आयुर्वेद में इसे संधिवात के नाम से जाना जाता है। इसमें मरीज के जोड़ों में सूजन आ जाती है। इसके चलते असह्य पीड़ा होती है और मरीज परेशान हो जाता है। रोग पुराना होने पर जोड़ों के खराब होने का खतरा रहता है। उम्र बढ़ने पर यह रोग लोगों को अपनी चपेट में ले लेता है।